P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-1* ISSUE-12* March- 2017
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

विद्यार्थियों को परीक्षा के भय से मुक्त करके उनका उपलब्धि स्तर बढ़ाना

मनोरमा जैन
उद्योग निदेशक,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
शासकीय शिक्षा महाविद्यालय,
देवास

सारांश

परीक्षा का आतंक पूरे समाज पर इस कदर हावी रहता है कि यह स्कूली शिक्षा के प्रारम्भिक स्तर तक व्याप्त हो जाता है । इसके परिणामस्वरूप छोटे बच्चों की तैयारी भी शुरू से बोर्ड की परीक्षा के अनुसार कराई जाती है और निदान तथा उपचार जैसे महत्वपूर्ण तत्व मुश्किल से ही इस परीक्षा प्रणाली का हिस्सा बन पाते हैं। परीक्षा का यह दुष्प्रभाव आज पूरी शिक्षा प्रणाली पर हावी है । यह विषय को पूर्ण प्रवीणता के साथ सीखने की अवधारणा को छिन्न – भिन्न कर देता है क्योंकि इससे पाठ्यविषयों के सीमित अथवा चयनित अंशों के ही पठन – पाठन और सीखने की प्रवृत्ति बन जाती है। वर्तमान परीक्षा प्रणाली का एक दोष यह भी है कि इसमें प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ती हुई प्रतियोगिता के कारण समाज ने परीक्षा – परिणामों को अनावश्यक महत्व दे रखा है। इससे छात्रों में इस कदर मनोवैज्ञानिक डर और तनाव पैदा हो जाते हैं कि अनेक प्रकार की बुराईयाँ परीक्षाओं में व्याप्त हो जाती है और असफल होने का भय इस सीमा तक चला जाता है कि कई बार छात्र आत्महत्या तक कर लेते है। आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा के प्रत्येक स्तर के लिए उद्देश्यों को निश्चित किया जाए, फिर उसके अनुसार इकाई – श्रृंखला के रूप में पाठ्यक्रम रखा जाए। इस प्रकार प्रत्येक इकाई का पृथक मूल्यांकन करके वर्ष के अन्त में पड़ने वाले परीक्षा के भार को कम किया जा सकता है। आवश्यक साधनों और विधियों का प्रयोग केवल विद्यार्थियों के कार्य में ही नहीं, बल्कि समग्र शिक्षा – प्रक्रिया के मूल्यांकन के लिए किया जाना चाहिए और जहाँ तक सम्भव हों विद्यार्थियों को दण्ड के तौर पर अनुत्तीर्ण करने की अपेक्षा आवश्यकतानुसार उनकी कमियों को उपचार – पाठ्यों द्वारा दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए।

मुख्य शब्द : निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा अधिनियम, वर्तमान परीक्षा पद्धति, माध्यमिक, मूल्यांकन, निदान।

प्रस्तावना

शिक्षा के महत्व से आज सम्पूर्ण विश्व परिचित है। देश के जन–जन में शिक्षा का प्रचार–प्रसार है। इस के लिए विश्व का प्रत्येक राष्ट्र ही नहीं, भारत देश भी प्रयत्नशील है, सकारात्मक परिणाम हासिल किए है। शिक्षा की सुविधा दूर–दराज के क्षेत्रों तक भी पहुँची है। तेज गति से लम्बी दूरी तय करके भी अपने को ठगा–सा महसूस कर रहे हैं। शिक्षा के प्रचार–प्रसार के बीच हमारी व्यवस्थाओं ने तमाम ऐसे समझौते किए हैं, जिनके परिणाम सुखद नहीं है।

भारतीय संविधान में 86वॉ संशोधन 2002 में कर शिक्षा को प्रत्येक नागरिक का मौलिक अधिकार बना दिया जिसे भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21(क) शिक्षा का अधिकार में सभी राज्य 6 से 14 वर्ष की आयु तक सभी बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा देने के लिए ऐसी नीति में जो राज्य विधि द्वारा अवधारित करें, उपबंध करें, यह 27 अगस्त, 2009 को राजपत्र में प्रकाशित हुआ, जिसकी 16 फरवरी, 2010 को जारी अधिसूचना के आधार पर यह अधिनियम 1 अप्रैल, 2010 से लागू हुआ।

निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा के अधिकार अधिनियम, 2009 में प्रथम दृष्टि में प्रमुख चार बातें प्रकाश में आयी है। प्रथम– सभी को शिक्षा – निश्चित ही इस बात पर कोई संदेह नहीं किया जा सकता। यदि इस अधिनियम का सही अर्थो में क्रियान्वयन हुआ तो देश के भविष्य की तस्वीर बदल जाएगी क्योंकि इससे वर्तमान में व्याप्त बालक–बालिका शिक्षा के स्तर के मध्य बढ़ती खाई समाप्त हो जायेगी। द्वितीय– इस अधिनियम के द्वारा बच्चों के लिए पड़ोस के स्कूल में प्रवेश की अवधारणा को पुनर्जीवित किया जा सकेगा, जिसकी अनुशंसा कोठारी आयोग और बाद में राम मूर्ति आयोग ने की थी, जो आज तक अपने जर्जर स्वरूप में हमारे चारों ओर बिखरी पड़ी है। तृतीय – इस विधेयक

द्वारा यह प्रावधान किया गया है कि कोई भी निजी विद्यालय, चाहे वह किसी भी स्तर का क्यों न हो, उन्हें अपने आस–पास रहने वाले गरीब तबके के बालक–बलिकाओं के लिये 25 प्रतिशत सीटों पर दाखिला देना ही होगा, इससे गरीब बालक–बालिकाओं को वातानुकूलित कक्षाओं में बैठकर शिक्षा पाने का सपना साकार हो सकेगा। यह सोचना आवश्यक होगा, कि इस अधिनियम के बल पर यदि इन बालकों को इन निजी विद्यालयों में प्रवेश दिलाना सफल भी हो जाता है तो क्या विद्यालयी वातावरण इन बालकों के समायोजन और व्यक्तित्व विकास में अहम् भूमिका निभायेगा। चतुर्थ – एक और महत्वपूर्ण प्रावधान जो इस अधिनियम द्वारा किया गया है, वह यह है, कि आठवीं कक्षा तक के बालक–बालिकाओं को फेल न करना और उन्हें हर वर्ष होने वाली परीक्षा के भय से मुक्ति प्रदान करना।

हमारी वर्तमान शिक्षा नीति व पद्धति में कुछ दोष है, उसके सुधार के लिए नई दृष्टि व दिशा की नितांत आवश्यकता है। विश्व व जीवन के हर क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए है तो शिक्षा में क्यों नहीं? जिन शिक्षकों पर बच्चों को सही मार्ग पर ले जाने की जिम्मेदारी होती है, उनका भी उचित मार्गदर्शन आवश्यक है। कुछ साल पहले की बात है, अमेरिकी शिक्षा प्रणाली एवं विशेषताओं का अध्ययन करने हेतु एक शिष्टमंडल वहां गया था। इस शिष्टमंडल में कई कुलपति, प्रधानाचार्य और शिक्षाविद् सम्मिलित थे। शिष्टमंडल ने पूरे अमेरिका का भ्रमण किया। कई महाविद्यालयों आदि को देखा, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों के बारे में जानकारी ली। भारत वापस लौटने से पूर्व यह शिष्टमंडल अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति जॉन एफ. केनेडी से मिला। उन्होने शिष्टमंडल के सदस्यों से पूछा, आप लोगों ने यहॉ की शिक्षा – प्रणाली के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त कर ली होगी। अगर इसमें कोई कमी हो तो कृपया सूचित कीजिए। शिष्टमंडल के सदस्यों ने उत्तर दिया, ऐसी कोई न्यूनता हमारी दृष्टि में नहीं आई। आपके यहॉ पढ़ाई के लिए आवश्यक बहुत सुंदर व स्वस्थ वातावरण है। अच्छे पुस्तकालय है, सुसज्जित प्रयोगशालाएं हैं। अध्यापक बहुत प्यार से पढ़ाते है। सभी ने अमेरिका शिक्षा प्रणाली की भूरि–भूरि प्रशंसा की। तब शिष्टमंडल के एक सदस्य ने केनेडी से पूछा, हम पूरा अमेरिका घूम आए। हमने सर्वत्र भरपूर भौतिक संपदा, सुख सुविधा देखी। आपने अमेरिका को एक सम्पन्न देश के रूप में कैसे निर्माण किया? उन्होनें इसका जो उत्तर दिया वह उल्लेखनीय है। उन्होंने कहा–

"Every Teacher in America looks at every student of America as a future president of America"

वहॉ के शिक्षकों को ऐसा प्रशिक्षण दिया जाता है कि वे पूरी जिम्मेदारी से भावी पीढ़ी का निर्माण करना अपना कर्तव्य मानते है। हमें भी अपने शिक्षकों को इस योग्य बनाना होगा कि वे भी हमारी पीढ़ी को वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय जिम्मेदारी निभाने योग्य नागरिकों का निर्माण कर सकें।

हम सामने वाले पर एक उंगली पूरे जोश से उठाते हैं परन्तु अपनी तरफ उठी तीन उंगलियों को नजर अंदाज कर देते है। मुझे लगता है शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहे हम सभी लोगों की प्रथम आवश्यकता शिक्षकों पर काम करने की है। उनकी सोई हुई कर्तव्य भावना एवं गौरव को जगाने की है। आज अधिकांश लोग अधिकार प्रधान जीवन जी रहे हैं। उनमें शिक्षक भी शामिल है, कर्तव्यों की इसी शून्यता ने शिक्षा के स्तर को यहां लाकर खड़ा कर दिया है। अब पहल करनी चाहिए कर्तव्यों की शून्यता समाप्त कर जिम्मेदारी को जगाने की। साधनों की अनुपलब्धता, शिक्षकों की कमी, वेतन के कम होने के बाद भी हम अपने लक्ष्य को कुछ हद तक प्राप्त करने में कामयाब हो सकते है क्योंकि एक श्रेष्ठ शिक्षक जो अपने कर्म के प्रति समर्पित है। उसे कोई भी कमी अपने लक्ष्य से हटा नहीं सकती।

मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय के निर्देशानुसार देश के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद जी के जन्म दिवस 11 नवम्बर को अब राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के रूप में मनाया जाने लगा है। मौलाना जी ने देश भर की जनता को वास्तव में शिक्षित बनाने के लिए पर्याप्त संसाधनों की मांग करते हुए तत्समय प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू जी से कहा था–

"शिक्षा का बजट रक्षा के बजट के बराबर होना चाहिए।"

आवश्यकता एवं महत्व

बालक राष्ट्र की नींव है और नींव मजबूत होने पर ही एक मजबूत राष्ट्र की कल्पना की जा सकती है। 11 से 13 वर्ष तक के बालक में विभिन्न प्रकार की रूचियां व विकास परिलक्षित होते है। वह बड़े लोगों की तरह व्यवहार करता है। कभी राजा बनता है, कभी सिपाही, कभी डॉक्टर बनता है, कभी इंजीनियर आदि अनेक रूपों में अपने भविष्य की कल्पना गढ़ता है। इस समय आवश्यकता है ऐसे शिक्षक की जो उसकी रूचियों को ध्यान में रखकर उसके विकास में सहायक हो। विद्यालय में एक समायोजित एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला शिक्षक उसे सही दिशा निर्देश दे सकता है।

10 से 18 वर्ष की उम्र को मनोविज्ञान में भी तूफान एवं दबाव का काल कहा गया है। यही समय विद्यार्थी को एक सुव्यवस्थित एवं सुसंस्कारित नागरिक बनाने का उचित समय होता है। इस दौरान उनके अंदर अनेक मानसिक व शारीरिक परिवर्तन आते हैं। ऐसे समय में विद्यार्थियों को समझने वाले उपयुक्त व्यक्ति की आवश्यकता होती है जो मानसिक व शारीरिक बदलावों से पूर्ण परिचित हो।

जीवन के शुष्क लगने वाले रेगिस्तान को, भावना व प्यार से सींचकर जीवन को हरा–भरा बनाया जा सकता है। उठती आयु ही प्रवृत्तियों को अपनाने की अवधि होती है। बड़ा होने पर जो आदतें अपना ली जाती हैं वे ही परिपक्व होती रहती हैं। ऐसा माना जाता है कि अध्यापक वर्ग अभिभावकों की तुलना में अधिक मान्य होता है। इसलिए अध्यापक का साथ विद्यार्थी को न केवल पढाई पूरी करने में बल्कि अच्छी आदतों, गुणों का विकास करने में भी अति आवश्यक है।

माध्यमिक स्तर पर इसी कच्ची उम्र में यदि उसे परीक्षा का भय लगने लगेगा तो वह आगे कभी उन्नति

नहीं कर पायेगा। इसलिये यही वह उचित समय है जब बालक को परीक्षा के भय से मुक्त करके स्वतंत्र व तनावरहित वातावरण में परीक्षा की तैयारी कराई जाये, और परीक्षा का डर उसके मन से पूरी तरह दूर करके ही परीक्षा ली जाये तभी वह बेहतर प्रदर्शन कर पायेगा। भयमुक्त परीक्षा के कारण उसकी उपलब्धि का स्तर उच्च होगा, जो आगे चलकर देश के भविष्य को मजबूती प्रदान करेगा। प्रस्तुत अनुसंधान माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को भयमुक्त परीक्षा हेतु प्रेरित करने के लिये किया गया है फलस्वरूप आगे आने वाली जीवन की प्रत्येक परीक्षा में वह अच्छा प्रदर्शन करें, भयमुक्त होकर परीक्षा दे, जिससे राष्ट्र की नींव मजबूत हो।

उद्देश्य

1. विद्यार्थियों को भयमुक्त परीक्षा के लिए प्रेरित करना।
2. विद्यार्थियों के लिये ऐसी परीक्षा आयोजित करना जो रूचिकर हो।
3. परीक्षा के भय से मुक्त करके विद्यार्थियों का उपलब्धि स्तर बढ़ाना।
4. निष्कर्ष के आधार पर उपयोगी सुझाव देना।

परिकल्पना

1. विद्यार्थियों को उनकी रूचि अनुसार अध्यापन कराने से परीक्षा के भय से मुक्ति मिलेगी और उनका उपलब्धि स्तर बढ़ेगा।

क्रियात्मक अभिकल्प

प्रस्तुत क्रियात्मक अनुसंधान हेतु परिकल्पना की पुष्टि के लिये क्रियात्मक अभिकल्प की रचना की गयी।

1. विद्यार्थियों के लिये सामाजिक विज्ञान का विषय का प्रश्नपत्र तैयार करना।
2. जनशिक्षा केन्द्र माधौगंज (रथखाना) से 5 शा.मा. वि. का चयन करना।
3. शा.मा. वि. में से कक्षा 7 के 20–20 विद्यार्थियों का रेण्डमली चयन करना।
4. प्रश्नपत्र द्वारा विद्यार्थियों की उपलब्धियों का पूर्व परीक्षण करना।
5. छात्र–छात्राओं द्वारा दिये गये उत्तरों का सारणीयन करना।
6. विद्यार्थियों को रूचिकर माहौल में शिक्षण कराना एवं खेल–खेल में ही प्रश्नों के उत्तर देने हेतु प्रेरित करना।
7. 15 दिवस शिक्षण उपरांत छात्र–छात्राओं की उपलब्धि का पुनः पश्च परीक्षण करना।
8. प्राप्त उत्तरों का सारणीयन करना एवं प्रतिशत आधार पर विश्लेषण करना।
9. पूर्व परीक्षण व पश्च परीक्षण से प्राप्त विद्यार्थियों की उपलब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
10. आवश्यकतानुसार छायाचित्रों द्वारा प्रदर्शन करना।
11. उपलब्धियों के स्तर द्वारा विद्यार्थियों की परीक्षा में भयमुक्ति का अध्ययन करना।
12. विश्लेषण उपरांत प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर शिक्षापयोगी सुझाव प्रस्तुत करना।

न्यादर्श

सारणी क्रमांक – 1
न्यादर्श जनशिक्षा केन्द्र

स. क्र.	नाम विद्यालय	विद्यार्थियों की संख्या
1.	शा. मा. वि. जे. ए. सिंध क्र.1	20
2.	शा. मा.वि. रथखाना माधौगंज	20
3.	शा. मा. वि. इंजीनियरिंग	20
4.	शा. मा. वि. सिकन्दरकम्पू	20
5.	शा. मा. क. वि. पद्मा	20
	कुल विद्यालय – 5	**100**

शोध उपकरण

1. कक्षा – 7 सामाजिक विज्ञान विषय के विद्यार्थियों के लिए पूर्व एवं पश्च परीक्षण प्रश्नपत्र।
2. विषय शिक्षक के लिये साक्षात्कार प्रश्नावली।

प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत क्रियात्मक अनुसंधान में प्रदत्तो का विश्लेषण प्रतिशत आधार पर किया गया है। प्रस्तुत शोध में आवश्यकतानुसार चित्रों द्वारा प्रदर्शन किया गया है।

प्रदत्तों का संग्रह

प्रस्तुत क्रियात्मक अनुसंधान में शोधार्थी ने स्वयं विद्यालय में उपस्थित रहकर विद्यार्थियों को पूर्व परीक्षण प्रश्नपत्र वितरित किये एवं प्रदत्तों का संग्रह किया। 15 दिवस तक विद्यार्थियों को रूचिकर माहौल में शिक्षण कराया एवं खेल–खेल में ही प्रश्नों के उत्तर देने हेतु प्रेरित किया जिससे विद्यार्थी भयमुक्त परीक्षा के लिये प्रेरित हुए। उसके पश्चात पुनः पश्च परीक्षण किया। विद्यार्थियों को प्रश्नपत्र वितरित किये एवं पुनः प्रदत्तों का संकलन किया।

प्रदत्तों का विश्लेषण

प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों द्वारा हल किये गये पूर्व परीक्षण व पश्चपरीक्षण प्रश्नपत्रों का प्रतिशत आधार पर विश्लेषण किया गया।

सारणी क्रमांक. 2

प्रश्न क्र.	विद्यालय क्रमांक. 1			
	पूर्व परीक्षण		पश्च परीक्षण	
	सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों की संख्या	सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों का %	सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों की संख्या	सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों का %
1.	11	55	20	100
2.	12	60	19	95
3.	7	35	19	95
4.	4	20	19	95
5.	7	35	18	90
6.	9	45	18	90
7.	8	40	19	95
8.	6	30	20	100
9.	3	15	19	95
10.	2	10	14	70

सारणी क्रमांक. 3

प्रश्न क्र.	विद्यालय क्रमांक. 2			
	पूर्व परीक्षण		पश्च परीक्षण	
	सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों की संख्या	सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों का %	सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों की संख्या	सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों का %
1.	9	45	20	100
2.	11	55	20	100
3.	7	35	18	90
4.	4	20	20	100
5.	6	30	18	90
6.	9	45	18	90
7.	8	40	18	90
8.	9	45	19	95
9.	4	20	19	95
10.	4	20	18	90

सारणी क्रमांक. 4

प्रश्न क्र.	विद्यालय क्रमांक. 3			
	पूर्व परीक्षण		पश्च परीक्षण	
	सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों की संख्या	सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों का %	सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों की संख्या	सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों का %
1.	8	40	18	90
2.	12	60	20	100
3.	7	35	19	95
4.	8	40	20	100
5.	5	25	18	90
6.	8	40	17	85
7.	7	35	19	95
8.	5	25	18	90
9.	6	30	18	90
10.	6	30	20	100

सारणी क्रमांक. 5

प्रश्न क्र.	विद्यालय क्रमांक. 4			
	पूर्व परीक्षण		पश्च परीक्षण	
	सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों की संख्या	सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों का %	सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों की संख्या	सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों का %
1.	12	60	20	100
2.	11	55	18	90
3.	8	40	18	90
4.	7	35	19	95
5.	8	40	20	100
6.	9	45	19	95
7.	10	50	20	100
8.	9	45	20	100
9.	11	55	20	100
10.	8	40	20	100

सारणी क्रमांक. 6

प्रश्न क्र.	विद्यालय क्रमांक. 5			
	पूर्व परीक्षण		पश्च परीक्षण	
	सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों की संख्या	सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों का %	सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों की संख्या	सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों का %
1.	10	50	19	95
2.	10	50	19	95
3.	8	40	20	100
4.	10	50	18	90
5.	8	40	19	95
6.	8	40	20	100
7.	9	45	20	100
8.	9	45	18	90
9.	10	50	20	100
10.	7	35	19	95

सारणी क्र. 1 से सारणी क्र. 5 के अनुसार विद्यालय क्रं.1 से लेकर विद्यालय क्र. 5 तक में प्रश्न क्र. 1 से लकर 10 तक सही उत्तर देने वाले छात्र–छात्राओं की संख्या में आश्चर्यजनक रूप से बढ़ोत्तरी हुई है। प्रतिशत के आधार पर देखा जाये तो पश्च परीक्षण में अधिकतर 90ः से लेकर 100ः विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिये है। जो कि पूर्व परीक्षण में अधिकतम 40ः से 50ः तक थे।

जनशिक्षा केन्द्र से प्राप्त डाटा के विश्लेषण उपरांत सारणी क्र. 7 में कुल 100 विद्यार्थियों के पूर्व परीक्षण एवं पश्च परीक्षण के आधार पर सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों की संख्या एवं प्रतिशत अंकित है।

सारणी क्रमांक. 7

प्रश्न क्र.	विद्यालय क्रमांक. 1 से 5 के कुल छात्र–छात्रायें			
	पूर्व परीक्षण		पश्च परीक्षण	
	सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों की संख्या	सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों का %	सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों की संख्या	सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों का %
1.	50	50	97	97
2.	56	56	96	96
3.	37	37	94	94
4.	33	33	96	96
5.	34	34	93	93
6.	43	43	92	92
7.	42	42	96	96
8.	37	37	95	95
9.	34	34	96	96
10.	27	27	91	91

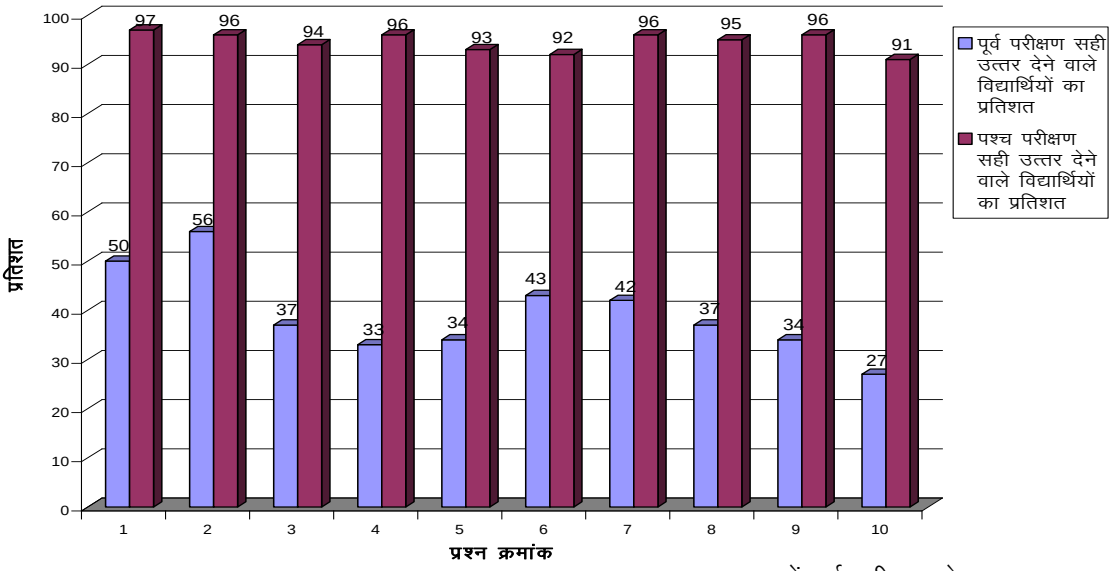

निष्कर्ष

1. प्रश्न क्र. 1 में पूर्व परीक्षण के आधार पर 50 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिया जबकि पश्च परीक्षण के आधार पर 97 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिया।
2. प्रश्न क्र. 2 के आधार पर पूर्व परीक्षण में 56 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिया जबकि 15 दिन स्वतंत्र माहौल में शिक्षा देने के बाद पश्च परीक्षण में 96 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिया।
3. प्रश्न क्र. 3 में पूर्व परीक्षण के आधार पर 37 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिया जबकि पश्च परीक्षण के आधार पर 94 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिया।
4. प्रश्न क्र. 4 में पूर्व परीक्षण के आधार पर 33 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिया जबकि पश्च परीक्षण के आधार पर 96 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिया।
5. प्रश्न क्र. 5 में पूर्व परीक्षण के आधार पर 34 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिया जबकि पश्च परीक्षण के आधार पर 93 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिया।
6. प्रश्न क्र. 6 में पूर्व परीक्षण के आधार पर 43 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिया जबकि पश्च परीक्षण के आधार पर 92 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिया।
7. प्रश्न क्र. 7 में पूर्व परीक्षण के आधार पर 42 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिया जबकि पश्च परीक्षण के आधार पर 96 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिया।
8. प्रश्न क्र. 8 में पूर्व परीक्षण के आधार पर 37 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिया जबकि पश्च परीक्षण के आधार पर 95 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिया।
9. प्रश्न क्र. 9 में पूर्व परीक्षण के आधार पर 34 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिया जबकि पश्च परीक्षण के आधार पर 96 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिया।
10. प्रश्न क्र. 10 में पूर्व परीक्षण के आधार पर 27 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिया जबकि पश्च परीक्षण के आधार पर 91 प्रतिशत विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिया।

अतः स्पष्ट है कि विद्यार्थियों को स्वंतत्र माहौल में और भयमुक्त वातावरण में शिक्षा दी जाये तो उनके बालमन से परीक्षा का भय निकल जायेगा और उनके उपलब्धि के स्तर में बढ़ोतरी होगी। परिकल्पना – "**विद्यार्थियों को उनकी रूचि अनुसार अध्यापन कराने से परीक्षा के भय से मुक्ति मिलेगी और उनका उपलब्धि स्तर बढ़ेगा**" की पुष्टि होती है।

सुझाव

सामाजिक विज्ञान विषय के शिक्षकों से साक्षात्कार प्रश्नावली से प्राप्त निष्कर्ष एवं विद्यार्थियों से प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण उपरांत जो निष्कर्ष प्राप्त हुए है तदनुसार परीक्षा के भय से मुक्त करने के लिये निम्नलिखित सुझाव दिये जा सकते है –

1. पढ़ाई को रटंत प्रणाली से मुक्त करना ओर ज्ञान को बाहर के जीवन से जोड़ना परीक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिये ।
2. प्रश्नपत्र अधिक लम्बा न हो, परीक्षाए अपेक्षाकृत छोटी हो तथा समय – समय पर अवकाश भी मिले ।
3. प्रश्न पत्रों में प्रश्न निबंधात्मक की बजाय वस्तुनिष्ठ (आब्जेक्टिव) बनाने का प्रयत्न किया जाये ।
4. अन्तिम मूल्यांकन करते समय छात्रों के विद्यालय रिकार्ड को भी महत्व दिया जाना चाहिये।
5. छात्रों की उपलब्धियों की जांच करने के लिये लिखित परीक्षा के अतिरिक्त मौखिक परीक्षा का प्रयोग किया जाना चाहिये ।

6. कुछ प्रयोगात्मक विद्यालयों की स्थापना की जाना चाहिये ।
7. बाह्य परीक्षाओं के साथ – साथ आन्तरिक जाँचों को प्रमाण पत्र प्रदान करने का आधार बनाया जाना चाहिये ।

अतः स्पष्ट है कि मूल्यांकन का प्रमुख लक्ष्य यह देखना है कि पाठ्यक्रमों के निर्धारित उद्देश्यों की किस सीमा तक प्राप्ति हुई है। यह प्रक्रिया स्वभावतः शैक्षिक अनुभवों और शिक्षण की विधियों से सम्बद्ध हैं। मूल्यांकन लिखित, प्रायोगिक और मौखिक परीक्षाओं, निरीक्षण स्तरीकरण इत्यादि विभिन्न साधनों और तरीकों से होना चाहिये ताकि विभिन्न उद्देश्यों और वस्तु सामग्री से सम्बद्ध संप्राप्ति का मूल्यांकन हो सके। मूल्यांकन थोड़े – थोड़े समय पर कई बार होना चाहिए । यह छः महीनों या वर्ष में केवल एक बार ही नहीं होना चाहिये क्योंकि इसका उद्देश्य विद्यार्थियों और अध्यापकों का तुरन्त पश्चपोषण करना है । विद्याार्थी मूल्यांकन के प्रति गलत दृष्टिकोण अपनाने की अपेक्षा उसे अपनी उपलब्धियों में सुधार का साधन समझ कर सही रूप में ग्रहण करें। पाठ्यक्रम के सभी विषयों में एक ही समय उत्तीर्ण होने पर बल देने और अनुत्तीर्ण होने के भय के कारण बहुत से विद्यार्थी असन्तुलित हो जाते है। उनका विकास अवरूद्ध हो जाता है । अतः मूल्यांकन में लचक होनी चाहिए। मूल्यांकन का तरीका ऐसा होना चाहिए कि विद्याार्थी कण्ठस्थ करने की प्रवृत्ति न अपनाएँ और अपने ज्ञान का उपयोग नयी स्थितियों और समस्याओं के समाधान ढूंढ़ने में कर सकें । बच्चे तब तक आलोचनात्मक चिन्तन, सर्जनात्मकता और मूल्यात्मक – निर्णय, जैसी ज्ञान की उच्च सीमाओं तक पहुँचने के लिए प्रयत्न नहीं करेंगे जब तक कि ज्ञान को उपयुक्त अनुभवों से विकसित करने और उसका उचित मूल्यांकन करने का प्रयत्न नही किया जाएगा ।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *पाठक पी.डी. (1982) भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा*
2. *डॉ. माथुर एस.एस. (1988–89) शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।*
3. *डॉ. वर्मा प्रीति एवं डॉ. डी.एन. श्रीवास्तव (1996) मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी, रवि मुद्रणालय, आगरा।*
4. *प्रो. के. नरहरि, (अक्टूबर 2011) स्कूल शिक्षा, स्वामी प्रकाशक एवं मुद्रक भोपाल, पेज न. 16।*
5. *दुबे सुरेन्द्रनाथ (नवम्बर 2011), स्कूल शिक्षा, पेज न.2*
6. *सामाजिक विज्ञान विषय की पाठ्यपुस्तक कक्षा – 7*
7. *डॉ. राजेन्द्र प्रसाद – परीक्षा एवं मूल्यांकन सुधार*